

(1) मैं ईश्वर में जीता/जीती हूँ, चलता/चलती हूँ और अपना अस्तित्व रखता/रखती हूँ। ईश्वर मेरे भीतर जीवन का सिद्धांत हैं, और मैं भली-भाँति जानता/जानती हूँ कि मैं इस सत्य के प्रति जागरूक हूँ। ईश्वर समस्त सृष्टि के जनक और स्रोत हैं, इसलिए ईश्वरीय ऊर्जा मेरे भीतर गतिमान है तथा अपना अस्तित्व और सार मुझमें प्रकट करती है।

(2) मैं जीवित ईश्वर का मंदिर हूँ। ईश्वर मेरे भीतर निवास करते हैं। मैं उस दिव्य उपस्थिति में पूर्णतः निमग्न हूँ, जो मुझे चारों ओर से घेरे हुए है, मुझे अपने संरक्षण में लिए हुए है और मुझे अपने आवरण में समेटे हुए है।

(3) मेरा मन ईश्वर का मन है और मेरी आत्मा ईश्वर की आत्मा है। मेरे भीतर विद्यमान यह अनंत सत्ता ही एकमात्र उपस्थिति और एकमात्र शक्ति है। इसे किसी भी प्रकार से पराजित, बाधित या निराश नहीं किया जा सकता।

(4) ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसका विरोध कर सके, इसे चुनौती दे सके, इसकी गति को रोक सके या इसकी शक्ति को निष्प्रभावी कर सके। यह सर्वशक्तिमान है। यह एकता के रूप में कार्य करती है। इसमें कोई विभाजन या संघर्ष नहीं है। यह सर्वशक्तिशाली और सर्वज्ञ है। यह हर स्थान पर उपस्थित है।

(5) जब मैं अपने विचारों के माध्यम से इस अनंत शक्ति के साथ मानसिक रूप से एकत्व स्थापित करता/करती हूँ, तब मैं जानता/जानती हूँ कि मैं किसी भी समस्या से बड़ा/बड़ी हूँ। मैं साहसपूर्वक सभी कठिनाइयों और समस्याओं पर विजय प्राप्त करता/करती हूँ, यह जानते हुए कि वे दिव्य शक्ति के सामने टिक नहीं सकतीं। और मुझे जिस भी शक्ति, सामर्थ्य या रचनात्मक विचारों की आवश्यकता होती है, वे मेरे भीतर स्थित दिव्य बुद्धिमत्ता द्वारा स्वतः मुझे प्रदान किए जाते हैं।

(6) मैं जानता/जानती हूँ कि अनंत सत्ता मेरे भीतर शांत, प्रसन्न और विश्राम की अवस्था में विद्यमान है, जहाँ केवल आनंद, सामंजस्य और शांति है। मैं अब उस अनंत सत्ता के साथ सामंजस्य में हूँ, और उसकी बुद्धि, शक्ति तथा

चेतना मेरे जीवन में सक्रिय और प्रभावशाली हो जाती हैं। यही मेरे अस्तित्व का नियम है, और मैं जानता/जानती हूँ कि ईश्वर की शांति मेरी आत्मा को भर देती है।

(7) मैं जानता/जानती हूँ कि मैं एक ही समय में दो अलग-अलग बातों पर विचार नहीं कर सकता/सकती। मैं एक साथ असफलता के बारे में सोचते हुए सफलता पर मनन नहीं कर सकता/सकती। जैसे ही मैं स्वयं को ईश्वर की इच्छा (WILL OF GOD) के प्रति समर्पित करता/करती हूँ, मेरा न्याय और आनंद पूर्ण रूप से मेरे जीवन में प्रकट होता है। और इसके लिए मैं अत्यंत कृतज्ञ और धन्यवादपूर्ण हूँ।